"गिजू भाई के बाल–शिक्षा के विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन"

अब्दुल मन्नान बाबर
शोध छात्र (शिक्षा शास्त्र) आईएफटीएम विश्वविद्यालय लोधीपुर मुरादाबाद (उ0प्र0)

डॉ0 राजकुमारी सिंह
आईएफटीएम विश्वविद्यालय लोधीपुर मुरादाबाद (उ0प्र0)

सार :–

बाल शिक्षा को वर्तमान परिदृश्य में सार्थक बदलाव लाना समय की मांग है। इस सम्बन्ध में दीक्षित व शाह का कथन ध्यान देने योग्य है– "हमें ऐसी पीढ़ी तैयार करनी होगी जो पुरानी रूढ़िवादी मान्यताओं से मुक्त हो, मनुष्य के व्यक्तिगत अधिकारों का सम्मान करने वाली हो तथा जो मानवता को एक धर्म के रूप में स्वीकार करे। इसके लिए पूरे ढाँचे को बदलना होगा। परम्परावादी सोच को केवल नारों के बल पर नहीं बदला जा सकता है। इस इमारत को तो नींव से ही मजबूत करना होगा। अगर मानव समाज ऐसा नहीं करता तो मानवाधिकारों की रक्षा का सवाल पूर्ण रूप से हल नहीं किया जा सकता।"

प्रस्तावना :–

शिक्षा बालक के लिये होती है न कि बालक शिक्षा के लिए। कहने का तात्पर्य हैकि बालक को केन्द्र बिन्दु मानकर ही शिक्षा की समग्र व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। बालक की वैयक्तिक विशेषताओं, उसकी अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचानते हुए उनका सर्वोत्तम विकास करना ही शिक्षा का महती ध्येय है। आत्म–परिपूर्णता के शिखर की और अग्रसर व्यक्ति ही समाज को भी नई ऊचाईयाँ प्रदान करने में सक्षम होते हैं।

बालक क्यों सीखे? क्या सीखे? कैसे सीखे? किससे और कब सीखे? क्या इन समस्त प्रश्नों के उत्तर खोजते समय बालक को सर्वथा भुला देना न्यायपूर्ण व युक्तिसंगत होगा?

व्यापक अर्थ में शिक्षा जीवन के समस्त अनुभवों का योग तथा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं। शिक्षा व्यक्ति की सम्पूर्ण सम्भावनाओं को उदघाटित करने की निरन्तर प्रक्रिया के रूप में ही स्वीकार हो सकती है।

रूसों ने शिक्षण के प्राचीन किलों को ऐसी स्वतन्त्रता के विचार से हिला डाला। अस्पष्ट होते हुए भी उनके विचार प्रबल प्रपात की भांति प्रवाहित हुए और पुरानी रूढ़ियों को तोड़फोड़ कर मैदान बना डाला ताकि स्वतन्त्रता की इमारत निर्मित की जा सके। जिस तरह से मॉण्टेसरी की स्वतन्त्रता का भूतकाल रूसों में देखा जा सकता है उसी तरह मॉण्टेसरी पद्धति की इन्द्रिय शिक्षा की झांकी भी रूसों के विचार में देखने को मिल जाती है। गिजू भाई मानते हैं कि जब अध्यापक में यह विश्वास जागता है कि मूढ़ बालक में भी 'शक्ति और क्षमताएँ होती है तो उन्हें उसी के अनुसार शिक्षण दिया जाना चाहिए।

मनुष्य को अपना परम लक्ष्य प्राप्त करने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए। बंधन में बंधा हुआ मनुष्य चल नहीं सकता। आज का मनुष्य तरह–तरह की परम्परा प्राप्त उत्तराधिकारियों से बंधा हुआ तो है ही, ऐसा कहा जाता है कि जब बालक किसी भी साधन का दुरूपयोग करे तो पता लगाना चाहिए कि उस समय उस दुरूपयोग के पीछे विकास की कौन सी 'शक्ति काम कर रही है। बालकों के अंतर्मन को समझने की ललक गिजू भाई में अपने नन्हे बेटे की चे"टाओं को देखकर उत्पन्न हुई। उनके चिंतन व कर्म को स्फुरण प्राप्त हुआ और वे सक्रिय हो उठे। वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि "मेरे एक नन्हे से पुत्र ने मेरे सम्पूर्ण जीवन को ही क्रियाशील बना डाला। अपने पुत्र की सहज और स्वाभाविक क्रियाऐं देख–देखकर मैं आनंदित होने लगा।"

बाल–शिक्षा में गिजू भाई के विचारों की उपयोगिता :–

- 'शैक्षिक वातावरण में बालक आसानी से नाटक, गीत, नृत्य, संवाद करना सीख सकते हैं।
- मनुष्य को अपना परम लक्ष्य प्राप्त करने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए। बालक स्वतन्त्र रहकर ही अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है।
- इनकी बाल–शिक्षा बालकों में सुरक्षा व आत्मविश्वास की भावना का विकास करने में सहायता करती है।
- प्रारम्भिक वर्षों में मिले उचित मार्ग दर्शन से बच्चे के विकास व उसकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता मिलती है।
- प्राथमिक विद्यालय में बच्चे उचित रूप से समायोजन कर सकने में समर्थ होते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- गिजू भाई बधेका के शैक्षिक चिन्तन की दिशा के निर्धरित तत्वों अर्थात् उनके शिक्षा दर्शन के उद्गम स्त्रोतों की पहचान करना।
- गिजू भाई बधेका जी के जीवन व कार्यों तथा 'शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाना।

- अनुशासन एवं बाल शिक्षा के सन्दर्भ में गिजू भाई बधेका जी के विचारों को प्रकाश में लाना।
- गिजू भाई बधेका जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें :–

- गिजू भाई बधेका जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के विकास में सहायक रहते हैं।
- गिजू भाई बधेका जी के 'शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शैक्षिक प्रणाली में सहायक रहते हैं।
- गिजू भाई की दृष्टि में शिक्षा जीवन व्यापी प्रक्रिया है।
- गिजू भाई को स्वातंत्र्य व स्वयं स्फूर्ति के साधन के रूप में देखते हैं।
- गिजू भाई बधेका जी द्वारा वर्णित शिक्षा वर्तमान भारतीय शिक्षा के विकास में सहायक है।
- गिजू भाई बधेका जी द्वारा वर्णित शिक्षण विधियां वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक है।

निष्कर्ष :–

गिजू भाई बधेका जी ने इस बात पर बल दिया है कि बाल शिक्षा स्वतन्त्र होनी चाहिए। गिजू भाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन बालकों के हितों की रक्षा हेतु अर्पित किया। बाल शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है वे सर्वांमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। गिजू भाई मॉण्टेसरी से अत्यधिक प्रभावित थे उनके शैक्षिक चिन्तन को सुनिश्चित दिशा प्रदान करने में मॉण्टेसरी का एक सशक्त प्रेरणा स्त्रोत के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सक्सैना एण्ड चतुर्वेदी, उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ आकाशगंगा बुक डिपो, 2006
2. बधेका गिजूभाई, माता–पिता से, दीनानाथ दीनानाथ दवे अनु० जयपुर, गीतांजलि प्रकाशन, 2004
3. त्यागी, गुरूसरनदास, उदीपमान भारत में शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 2003
4. गोसालिया दिव्या, 2004, चिन्तक और चिन्तन, परिप्रेक्ष्य वर्ष 11, अंक–2 अगस्त
5. पचौरी गिरीश, उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ, लायल बुक डिपो, 2006
6. बधेका, गिजूभाई– शिक्षकों से, गीतांजलि प्रकाशन, जयपुर।
7. शर्मा, डॉ० शंकरदयाल– हमारी सांस्कृतिक धरोहर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1993
8. सक्सेना, एन०आर०स्वरूप – 'शिक्षा सिद्धान्त' इन्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ 1991
9. श्रीवास्तव, प्रदीप चन्द्र– प्रारम्भिक शिक्षा के मूलतत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, 2006
10. शर्मा, श्रीराम, बालकों का भावात्मक निर्माण, मथुरा, युग निर्माण योजना, 2004।
11. शर्मा, आर० ए० (2003)– शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी आर० लाल० बुक डिपो, मेरठ।
12. 'आर्य', मोहन लाल, "शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2014।
13. 'आर्य', मोहन लाल, "शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2016।
14. 'आर्य', मोहन लाल, "अधिगम और शिक्षण", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।
15. 'आर्य', मोहन लाल, "ज्ञान और पाठ्यक्रम", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।
16. 'आर्य', मोहन लाल, "अधिगम के लिए आंकलन", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।
17. 'आर्य', मोहन लाल, "शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।
18. 'आर्य', मोहन लाल, 'पाण्डे' महेन्द्र प्रसाद, कौर भूपेन्द्र एवं गोला राजकुमारी, "सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।
19. 'आर्य', मोहन लाल, "शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2018।